पहले प्रकार के रूहानी परवानो की निशानियां

बाबा ने बताया कि जो नम्बरवन परवाने हैं उनको स्वयं का अर्थात् इस देह–भान का, दिन–रात का, भूख और प्यास का, अपने सुख के साधनों का, आराम का – किसी भी बात का आधार नहीं।

सब प्रकार की देह की स्मृति से खोये हुए हो, अर्थात् निरन्तर शमा के लव में लवलीन हुए हो जैसे शमा ज्योति–स्वरूप है, लाइट–माइट रूप है, वैसे शमा के समान स्वयं भी लाइट–माइट रूप हो।

01.02.76

अव्यक्त पालना का रिटर्न

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न :

मीठे बाबा, दूसरे प्रकार के परवानो की क्या निशानियां है?

उत्तर :

मीठे बच्चे, दूसरे प्रकार के परवाने, शमा की लाइट और माइट को देखते हुए उसकी तरफ आकर्षित ज़रूर होते हैं, समीप जाना चाहते हैं, समान बनना चाहते हैं, लेकिन देह-भान की स्मृति व देह के सम्बन्ध की स्मृति, देह के वैभवों की स्मृति, देह-भान के वश तमोगुणी संस्कारों की स्मृति समीप जाने का साहस व हिम्मत धारण करने नहीं देती है इन भिन्न-भिन्न स्मृतियों के चक्कर में समय गँवा देते हैं!

01.02.76

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

प्यारे बाबा, चतुर बच्चो के लिये आप ने क्या बताया है?

बापदादा :-

मीठे बच्चे,

☀ श्रेष्ठ ठिकाना जानते हुए भी अल्पकाल के ठिकाने आईवेल अर्थात् ऐसे समय के लिये बना कर रखे हैं ऐसे भी बहुत चतुर हैं।

☀ लेने के समय सब लेने में होशियार हैं, लेकिन छोड़ने के समय बाप से चतुराई करते हैं। क्या चतुराई करते हैं? छोड़ने के समय भोले बन जाते हैं। "पुरुषार्थी हैं, समय पर छूट जावेगा, सरकमस्टाँसिज़ ऐसे हैं, हिसाब-किताब कड़ा है, चाहता हूँ लेकिन क्या करूँधीरे-धीरे हो ही जायेगा" - ऐसे भोले बन बातें बनाते हैं।

☀ नॉलेजफुल बाप को भी नालेज देने लग जाते हैं! कर्मों की गति को जानने वाले को अपनी कर्म-कहानियाँ सुना देते हैं। और लेते समय चतुर बन जाते हैं। चतुराई में क्या बोलते हैं - "आप तो रहमदिल हो, वरदाता हो। मैं भी अधिकारी हूँ, बच्चा बना हूँ तो पूरा अधिकार मुझे मिलना चाहिये।"

☀ लेने में पूरा लेना है और छोड़ने में कुछ-न-कुछ छुपाना है अर्थात् कुछ-न-कुछ अपने पुराने संस्कार, स्वभाव व सम्बन्ध - वह भी साथ-साथ रखते रहना है। तो चतुर हो गये ना। लेंगे पूरा लेकिन देंगे यथा-शक्ति। ऐसे चतुराई करने वाले कौनसी प्रारब्ध को पायेंगे। ऐसे चतुर बच्चों के साथ ड्रामा अनुसार कौन-सी चतुराई होती है?

01.02.76

1-2-76
अव्यक्त वाणी का
मुख्य बिंदु

जो नम्बरवन परवाने है
उनको स्वयं का अर्थात्
इस देहभान का,
दिन-रात का,
भूख-प्यास का,
अपने सुख के साधनो
का, आराम का - किसी
भी बात का आधार
नही सब प्रकार की
देह की स्मृती से खोये
हुए हो,
अर्थात

निरंतर शमा
के Love मे
लवलीन हुए हो
जैसे शमा ज्योति-स्वरूप है,
लाईट-माईट रूप है,
वैसे शमा के समान

स्वयं भी लाईट माईट रूप हो

01-02-76 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं रूहानी परवाना हूँ।

रूहानी परवाना अर्थात् निरन्तर शमा के लव में लवलीन। अनेक चक्कर समाप्त कर स्वदर्शन चक्रधारी बनने वाली। संगम युगी ब्राह्मण का टाइटल प्राप्त करने वाली।

01-02-76

रूहानी शमा और तीन प्रकार के रूहानी परवाने

बाबा ने बताया कि जो नम्बरवन परवाने हैं उनको स्वयं का अर्थात् इस देहभान का, दिन-रात का, भूख और प्यास का अपने सुख के साधनों का, आराम का किसी भी बात का आधार नहीं। सब प्रकार की देह की स्मृति से खोये हुए हो, अर्थात् निरन्तर शमा के लव में लवलीन हुए हो। जैसे शमा ज्योति-स्वरूप है, लाइट-माइट रूप है, वैसे शमा के समान स्वय भी लाइट-माइट रूप हो।

अगर कोई भी व्यर्थ स्मृति के चक्कर अब तक लगाते हो तो स्वदर्शन चक्रधारी, संगमयुगी ब्राह्मणों का टाइटल प्राप्त नहीं हो सकेगा।